अतिथि कवि

कविता पाठ के लिए
डॉ. वर्षा सोलंकी सादर आमंत्रित हैं...

डॉ. वर्षा सोलंकी

शिक्षा:
एम.ए. हिंदी
एम.ए. जन संचार एवं पत्रकारिता

संप्रति : अध्यापक

विशेष :
इलेक्ट्रॉनिक्स मीडिया में साहित्यिक पत्रकारिता

सम्मान
'साहित्य शिरोमणि', 'अंतर्राष्ट्रीय तथागत सृजन सम्मान', 'विद्या सागर सारस्वत सम्मान', 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी तपोनिष्ठ सरस्वती सम्मान' जैसे कई सम्मान से सम्मनित। इसके अलावा हिंदी महाविद्यालय राजमहेंद्रवरम, गोमांतक राष्ट्रभाषा विद्यापीठ, गोवा एवं मैसूर हिंदी प्रचार परिषद, बंगुलुरु से सम्मानित।

कृति:
(1) हिंदी काव्य संग्रह 'अंतर्मन'
(2) हिंदी कहानी संग्रह 'वृंदा' एवं गुजराती काव्य संग्रह 'मननी मिरात'

संपर्क:
947710616, 8320118498

ई-मेल:
solankivarsha575@gmail.com

जीने की इजाज़त

मैं हर रोज़ सुबह
अपनी ही छाया को पहनती हूं,
आईने में मुस्कराती हूं–
जैसे सब कुछ ठीक है।
पर रात के अकेलेपन में
मैं टूटती हूं–
शब्दों के उन टुकड़ों में
जो किसी से कहे नहीं गए।
कभी मैं मां हूं,
तो कभी प्रेमिका...
कभी मज़दूर, कभी देवी,
पर असल में मैं कौन हूं?
मैं वो हूं
जिसने अपने सपनों को
सबकी नींदों के नीचे दबा दिया–
बस इसलिए कि घर चलता रहे।
मैंने लड़ाइयां लड़ी–
बिना शोर के, बिना तलवार के,
माथे की बिंदी में
अपने आंसुओं को छुपा लिया।
और फिर
एक दिन
मैंने खुद से पूछा–
'क्या मुझे जीने की इजाज़त है?'

जिंदगी और खामोशी

जिंदगी चलती रही
खामोश हवा की तरह
न कोई शोर,
न कोई निशान छोड़ती हुई।
रास्तों पर मैं थी–
पर कोई मंज़िल न थी...
कभी किराये के घर में
खुद से बातें करती रही,
कभी वक़्त की दीवार पर
तेरे नाम की परछाइयां टांकती रही..
किसी ने पूछा–
'अब किसका इंतजार है?'
मैं मुस्कुरा दी–
जैसे सवाल सुना ही न हो...
कुछ रिश्ते किताबों जैसे थे–
पढ़े भी गए, समझे भी नहीं।
कुछ ख़्वाब बारिश की तरह गिरे–
भीगकर भी, प्यासे ही रहे...
अब भ चल रही हूं–
बस उस हवा की तरह जो खुद भी
थक चुकी है,
मगर रुकना जानती नहीं...

तमाशबीनों की दुनिया

तमाशबीनों की दुनिया में
हम तन्हा चलने वाले हैं।
हर मोड़ पर इक भीड़ मिली,
पर सब चेहरे भाले हैं।
ताली भी पड़ी गिरने पर,
और वाह-वाह भी मिलती थी,
मगर किसी ने आंसू पूछे,
ऐसी रस्म कहां चलती थी।
हमने तो बस सच बोला था,
झूठों की ये महफ़िल क्या थी,
जहां हर शक्ल पे नक़ाब था,
और हर बात अदावत-सी थी।
तमाशबीनों की दुनिया में,
जो रोया-वो कमज़ोर बना,
जो चुप रहा–वो मसीहा कहलाया,
जो टूट गया–वो शायर बना।

सुना है कल हिजड़ों की महफ़िल लगी थी

सुना है कल हिजड़ों की
महफ़िल लगी थी
जहां वक़्त को
आईना दिखाया गया था
जहां तालियां गूंजी थीं,
पर तमाशा नहीं था
जहां आंखें नम थीं,
पर भीख नहीं थी
वो जो गाली बन गए थे
तुम्हारी जुबानों में
कल अपने नाम के आगे
गर्व से मुस्कराए थे
और हमने,
जो मर्द और औरत के
सांचों में पलते रहे
कभी खुद से भी
आंखें नहीं मिला सके
सुना है कल
उन्होंने सवाल किए थे
क्या लिबास से इज़्ज़त मापोगे?
क्या जिस्म से जज़्बात तोलोगे?
क्या तालियां सिर्फ़
तमाशे की गूंज होंगी
या कभी इंक़लाब की भी?
मैं सोचती हूं–
हम सब जो
खुद को मुकम्मल कहते हैं
असल में अधूरे हैं,
क्योंकि सच कहने की
हिम्मत अधूरी है
कल जिनकी चुप्पी पर
हंसी आती थी
आज उनकी ख़ामोशी में
अनगिनत ख्वाबों की
रोशनी झलकती है।

मलाल

मलाल तो मुझे तब भी नहीं था
आज भी नहीं है।
जब सबने मेरी ख़ामोशी को
कमजोरी समझा
जब रिश्तों ने
मेरा साया तक लौटाया
जब आवाज मेरी
और फैसला तुम्हारा था
मैं टूटी नहीं,
सिर्फ़ थोड़ा थक गई थी
मुझे आदत है
मुस्कराने की–
जब आंसू क़तार में हों
और आदत है
खामोश रहने की–
जब दुनिया शोर मचाए
मैंने कुछ ख़्वाबों को
सीने में ही दफ़ना दिया
कुछ को तन्हा छो दिया
खुली खिड़की के पास
पर मलाल तब भी नहीं था
आज भी नहीं है
क्योंकि मैंने खुद को
कभी किसी के हिस्से में नहीं बांटा
और नही
अपनी क़ीमत लगने दी
मैं आज भी वहीं हूं–
जहां से लौट आना सबने सीखा
और रुक जाना सिर्फ़ मैंने।

अपनी जगह

जो औरत हर बार टूटी
वही हर बार सबसे ऊंची उठी।
जिसे वक़्त ने कोसा,
जिसे दुनिया ने कभी जगह नहीं दी,
जिसे उसके होने से भी एतराज़ रहा
वो ही औरत
हर किरदार की रीढ़ बनी।
जिसके सपनों को
सुबह से पहले ही कुचल दिया गया,
जिसकी हंसी पर तंज लिखे गए,
जिसकी चुप्पी को
कमजोरी समझा गया
वो ही औरत
हर रोज़ अपने आंसुओं से
एक नया सूरज उगाती रही।
तुमने जो इमारतें खड़ी की
उनकी नींव में उसका खून मिला है।
तुमने जो रिश्ते पाले,
उनमें उसकी सांसे शामिल हैं।
तुम उसे तोड़ सके
ये सच है
मगर मिटा ना सके
ये इतिहास है।
जो औरत हर बार टूटी,
वही हर बार सबसे ऊंची उठी।
और इस बार वो झुकी नहीं
उसने अपनी जगह
खुद गढ़ी।

वक्त का शहरा ओढ़े कोई दस्तक दे जाता है
समझते है जिसे अपना जैसे वो आ जाता है
गलियों से गुजरता शाया भी देखो तो सही
तन्हाई में दिल से गुजरकर नज़्म बन जाता है